Date 06-07-2020

Smt. Dr Tapati Mukerjee
Associate Prof.
H.O.D in Music.
Rohtas Mahila College
Sasaram.

Study Metarial For B.A Part I (Hons) (1)
Paper 1st TREV

Topic – क्या भरत की श्रुतियाँ समान है ?

भरत की श्रुतियों के विषय में विद्वानों की भिन्न मत भेद पाया जाता है। पंडित आलस कुलकर्णी जी के मतानुसार श्रुतियाँ समान दूरी पर फैली हुई थी उनका कहना था कि अगर श्रुतियां समान न होती तो सारणा-चतुष्टी का प्रयोग सफल नहीं होता। षड्ज-ग्राम में पंचम स्वर 17 वी श्रुति पर स्थापित था। जबकी प्रथम सारणा में 16 वी पर द्वितीय सारणा में 15, तृतीय सारणा में 14 तथा चतुर्थ या अन्तीम सारणा में 13 श्रुति पर पंचम स्वर स्थापित हुई। यदि श्रुतियाँ समान नहीं होती तो पंचम स्वर क्रमशः 15 वी, 14 वी एंव 13 वी पर स्थापित नहीं हो पाता।

दुसरी और भरत ने यह भी वर्णन किया कि, चल वीणा का गांधार और निषाद स्वर अचल वीणा की रिषभ (रे) तथा धैवत पर मिल गया। इसी प्रकार तीसरी सारणा में अचल वीणा का षड्ज (सा) और पंचम प से मिल गया और पंचम स्वर तेरवी श्रुति पर आ गया जो कि अचल वीणा का मध्यम स्वर है।

कुछ संगीत विद्वानों ने इस मत को पुष्टि किए है। जबकी पुना के फिरोज फ्रामजी ने इस मत का विरुद्ध किया और यह सिद्ध किया कि भरत की श्रुतियां असमान थी। वास्तव मे षड्ज ग्रामिक स्वरों मे से

मध्यम ग्रामिक स्वर बनाने के लिए जिन (2) श्रुति निश्चयात्मक लिए और जिनका उत्कर्ष तथा अपकर्ष किया है उनकी अन्तर को "भरत" ने प्रमाण:- श्रुति कहा है,

पंडित ओमकार नाथ ठाकुर के मतानुसार षड़ज ग्राम को मध्यम ग्राम में परिवर्तित करने के लिए भरत ने पंचम स्वर को एक-एक श्रुति नीचे स्थापित किये हैं,

"प्रो० ललित किशोर सिंह" ने भी अपनी पुस्तक "ध्वनी और संगीत में गणित द्वारा यह सिद्ध किये कि भरत के श्रुतियां असमान थी। डा० क्लेमेंटस ने अपनी पुस्तक "Introduction of the study of Indian Music" में यह सिद्ध किया कि भरत के श्रुतियाँ- असमान थी।